# अनुक्रमणिका

# अनुक्रमणिका


| | | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| **प्रथम अध्याय** | **शिक्षा से तात्पर्य और वर्तमान भारतीय शिक्षा जगत का प्रारूप एक आकलन** | **1 से 28** |
| **1.1** | **शिक्षा का शाब्दिक अर्थ** | |
| **1.2** | **शिक्षा का शब्दकोशीय अर्थ** | |
| **1.3** | **शिक्षा का संकुचित अर्थ** | |
| **1.4** | **शिक्षा का व्यापक अर्थ** | |
| **1.5** | **शिक्षा के संदर्भ में भारतीय विद्वानों के मत** | |
| **1.5.1** | **डॉ. राधाकृष्णन** | |
| 1.5.1.1 | शिक्षा और वसुधैव कुटुंबकम् | |
| 1.5.1.2 | नैतिकता | |
| 1.5.1.3 | शिक्षा और अध्यात्मिकता | |
| 1.5.1.4 | शिक्षा में जनतांत्रिक पद्धति | |
| 1.5.1.5 | धार्मिक शिक्षा | |
| | निष्कर्ष | |
| **1.5.2** | **स्वामी विवेकानंद** | |
| 1.5.2.1 | शिक्षा के उद्देश्य | |
| 1.5.2.2 | गुरुकुल प्रणाली में विश्वास | |
| 1.5.2.3 | व्यवसायिक शिक्षा | |
| 1.5.2.4 | नारी-शिक्षा | |
| 1.5.2.5 | धार्मिक शिक्षा | |
| 1.5.2.6 | जन शिक्षा | |
| 1.5.2.7 | शिक्षकों के प्रति | |
| 1.5.2.8 | शिक्षकों के कार्य | |
| 1.5.2.9 | विद्यार्थियों के प्रति | |

1.5.2.10 मन की एकाग्रता

निष्कर्ष

**1.5.3 महात्मा गांधी**

1.5.3.1 शिक्षा के उद्देश्य

1.5.3.1.1 तात्कालीक उद्देश्य

1.5.3.1.1.1 जीविकोपार्जन

1.5.3.1.1.2 सांस्कृतिक उद्देश्य

1.5.3.1.1.3 बहुमुखी विकास

1.5.3.1.1.4 चरित्र-निर्माण

1.5.3.1.1.5 मुक्ति

1.5.3.1.2 शिक्षा का सर्वोच्य उद्देश्य

1.5.3.1.3 बुनियादी शिक्षा पद्धति

1.5.3.1.3.1 सात वर्षों तक बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा

1.5.3.1.3.2 मातृभाषा द्वारा शिक्षा

1.5.3.1.3.3 किसी मूल उद्योग के आधार पर शिक्षा

1.5.3.1.3.4 समवायी शिक्षा

1.5.3.1.3.5 स्वावलंबी शिक्षा

1.5.3.1.4 बुनियादी शिक्षा पद्धति में शिक्षक

1.5.3.1.5 बुनियादी शिक्षा पद्धति में विद्यालय का रूप

निष्कर्ष

**1.5.4 महामना मदनमोहन मालवीय**

1.5.4.1 शिक्षा का लक्ष्य

1.5.4.1.1 आदर्श मानव का निर्माण

1.5.4.1.2 राष्ट्रीय शिक्षा

1.5.4.1.3 नैतिक शिक्षा

1.5.4.1.4 शारीरिक शिक्षा

1.5.4.1.5 प्राचीन शिक्षा का प्रसार

1.5.4.1.6 स्त्री शिक्षा

| | | |
|---|---|---|
| 1.5.4.1.7 | शिक्षा का माध्यम | |
| 1.5.4.2 | धार्मिक शिक्षा | |
| 1.5.4.3 | विद्यार्थियों के प्रति | |
| | निष्कर्ष | |
| **1.5.5** | **स्वामी दयानंद सरस्वती** | |
| 1.5.5.1 | वैदिक शिक्षा पर बल | |
| 1.5.5.2 | चरित्र-निर्माण | |
| 1.5.5.3 | सादा जीवन उच्च विचार | |
| 1.5.5.4 | गुरूकुल प्रणाली का समर्थन | |
| 1.5.5.5 | अध्ययन की व्यवस्था | |
| 1.5.5.6 | सह-शिक्षा | |
| 1.5.5.7 | शरीर स्वस्थ | |
| | निष्कर्ष | |
| **1.5.6** | **रवींद्रनाथ ठाकुर** | |
| 1.5.6.1 | शिक्षा के उद्देश्य | |
| 1.5.6.2 | चरित्र निर्माण | |
| 1.5.6.3 | प्रकृति में शिक्षा | |
| 1.5.6.4 | धार्मिक शिक्षा | |
| 1.5.6.5 | स्वावलंबी शिक्षा | |
| 1.5.6.6 | मातृभाषा द्वारा शिक्षा | |
| 1.5.6.7 | शिक्षकों के प्रति | |
| | निष्कर्ष | |
| **1.6** | **वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति का स्वरूप** | |
| | निष्कर्ष | |
| **द्वितीय अध्याय** | **गिरिराज शरण द्वारा संपादित कहानियों का संक्षेप में परिचय ।** | **29 से 53** |
| 2.1 | पुस्तकालय प्रसंग | |
| 2.2 | प्रिंसिपल | |

2.3 उपनिवेश
2.4 अन्धेरे के कैदी
2.5 वजूद
2.6 कोलाहल
2.7 गोकुल
2.8 ट्यूशन
2.9 पुत्र
2.10 स्कूलगाथा
2.11 परथम श्रेणी सबको दो
2.12 आलू की आँख
2.13 मदारी
2.14 संदर्भ
2.15 राख हो चुका समय
2.16 इतना बड़ा पुल
2.17 इसी शहर में
2.18 मान - मर्दन
2.19 दिशाहीन
2.20 मामला एक रूष्ट अन्तरात्मा का
2.21 दीक्षा - गाथा

**तृतीय अध्याय विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत का व्यक्त यथार्थ 54 से 81**

**3.1 छात्रों से संबंधित व्यक्त यथार्थ**

3.1.1 राजनीति का शिकार छात्र
3.1.2 मानसिक द्वंद्व का शिकार हुए छात्र
3.1.3 व्यसनी छात्र
3.1.4 विद्रोही छात्र
3.1.5 स्वतंत्र विचारों वाले छात्र
3.1.6 गुंडागर्दी करने वाले छात्र
3.1.7 विनम्र छात्र

| | |
|---|---|
| 3.1.8 | बाहरी चमक-दमक की ओर आकर्षित छात्र |
| 3.1.9 | आदर्श छात्र |
| | निष्कर्ष |
| **3.2** | **अध्यापकों से संबंधित व्यक्त यथार्थ** |
| 3.2.1 | व्यसनी अध्यापक |
| 3.2.2 | अन्याय सहन करने वाले अध्यापक |
| 3.2.3 | अनीति से समझौता करने वाले अध्यापक |
| 3.2.4 | अध्यापन कार्य में असफल अध्यापक |
| 3.2.5 | लाचार अध्यापक |
| 3.2.6 | अध्यापन को गंधा पेशा मानने वाला अध्यापक |
| 3.2.7 | पुस्तकें तथा पुस्तकालय के उपयोग को न जाननेवाला अध्यापक |
| 3.2.8 | भ्रष्टाचारी अध्यापक |
| 3.2.9 | घमंडी अध्यापक |
| 3.2.10 | अप्रशिक्षित अध्यापक |
| 3.2.11 | कथनी और करनी में अंतर रखनेवाला अध्यापक |
| 3.2.12 | पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ न पढ़ने वाला अध्यापक |
| 3.2.13 | विद्रोही अध्यापक |
| 3.2.14 | कर्तव्यदक्ष अध्यापक |
| 3.2.15 | संवेदनशीन अध्यापक |
| | निष्कर्ष |
| **3.3** | **मुख्याध्यापक एवं प्राचार्यों से संबंधित व्यक्त यथार्थ** |
| 3.3.1 | राजनीति में माहिर प्राचार्य |
| 3.3.2 | भ्रष्टाचारी प्राचार्य |
| 3.3.3 | संपत्ति प्रेमी प्राचार्य |
| 3.3.4 | संवेदनहीन प्राचार्य |
| 3.3.5 | तानाशाह प्राचार्य |
| 3.3.6 | जातीयवादी प्राचार्य |
| 3.3.7 | निंदक प्राचार्य |

| | | |
|---|---|---|
| 3.3.8 | कमजोर प्राचार्य | |
| 3.3.9 | अध्यापकों को निरूत्साह करनेवाला प्राचार्य | |
| 3.3.10 | अध्यापकों की पदोन्नति में रूकावट डालनेवाला प्राचार्य | |
| 3.3.11 | चापलूस प्राचार्य | |
| | निष्कर्ष | |
| **3.4** | **कुलपति से संबंधित व्यक्त यथार्थ** | |
| 3.4.1 | विवेकहीन कुलपति | |
| 3.4.2 | राजनीतिज्ञ कुलपति | |
| 3.4.3 | अध्यापकों की सहायता करनेवाला कुलपति | |
| | निष्कर्ष | |
| **3.5** | **कर्मचारियों से संबंधित व्यक्त यथार्थ** | |
| 3.5.1 | कामचोर कर्मचारी | |
| 3.5.2 | लाचार कर्मचारी | |
| 3.5.3 | कमीशन खानेवाला कर्मचारी | |
| 3.5.4 | स्वाभिमानी कर्मचारी | |
| | निष्कर्ष | |
| **चतुर्थ अध्याय** | **विवेच्य कहानियों में व्यक्त यथार्थ समस्याएँ और समाधान** | **82 से 100** |
| 4.1 | अध्यापकों के आर्थिक शोषण की समस्या | |
| 4.2 | नौकरी में असुरक्षा की समस्या | |
| 4.3 | योग्यता की उपेक्षा करते हुए सिफारिश से की जानेवाली नियुक्ति की समस्या | |
| 4.4 | असंगठन के अभाव की समस्या | |
| 4.5 | गुटबाजी की समस्या | |
| 4.6 | समृद्ध ग्रंथालय के अभाव की समस्या | |
| 4.7 | अयोग्य छात्र नेताओं की समस्या | |
| 4.8 | सदोष परीक्षा प्रणाली की समस्या | |
| 4.9 | सुविधा-सामग्री युक्त इमारतों के अभाव की समस्या | |

| | | |
|---|---|---|
| 4.10 | सदोष शैक्षणिक प्रशासन की समस्या | |
| 4.11 | सदोष प्रवेश प्रक्रिया की समस्या | |
| 4.12 | सरकार की ओर से ग्रामीण विद्यालयों की उपेक्षा | |
| 4.13 | नारी-शिक्षा की उपेक्षा | |
| 4.14 | अमनोवैज्ञानिक वातावरण | |
| 4.15 | राष्ट्रभाषा हिंदी की उपेक्षा | |
| 4.16 | पैसों का अपव्यय | |
| 4.17 | छात्र अध्यापकों के संबंधों में आत्मीयता का अभाव | |
| 4.18 | अध्यापक और मुख्याध्यापक के संबंधों में आत्मीयता का अभाव | |
| 4.19 | सदोष पाठ्यक्रमों की समस्या | |
| 4.20 | हड़ताल एक समस्या | |
| 4.21 | विद्यालयों में भ्रष्ट राजनीति की समस्या | |
| | निष्कर्ष | |
| **पंचम अध्याय** | **विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन** | **101 से 114** |
| **5.1** | **शिल्प के तात्पर्य** | |
| **5.2** | **विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शिल्प** | |
| 5.2.1 | कथावस्तु और शिल्प | |
| 5.2.2 | चरित्र चित्रण और शिल्प | |
| 5.2.3 | कथोपकथन और शिल्प | |
| 5.2.4 | परिवेश और शिल्प | |
| 5.2.5 | भाषा और शिल्प | |
| **5.3** | **विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शब्द और मुँहावरे** | |
| 5.3.1 | संस्कृत शब्द | |
| 5.3.2 | देशज शब्द | |
| 5.3.3 | अरबी शब्द | |
| 5.3.4 | फारसी शब्द | |
| 5.3.5 | अंग्रेजी शब्द | |
| 5.3.6 | मुँहावरे | |

| | | |
|---|---|---|
| **5.4** | **विवेच्य कहानियों में प्रयुक्त शैली** | |
| 5.4.1 | वर्णनात्मक शैली | |
| 5.4.2 | आत्मकथात्मक शैली | |
| 5.4.3 | पत्रात्मक शैली | |
| 5.4.4 | भाषण शैली | |
| 5.4.5 | व्यंग्यात्मक शैली | |
| 5.4.6 | प्रतीकात्मक शैली | |
| 5.4.7 | भावात्मक शैली | |
| 5.4.8 | विचार प्रधान शैली | |
| | निष्कर्ष | |
| | **उपसंहार** | **115 से 118** |
| | **संदर्भ ग्रंथ सूची** | **119 से 123** |